विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) वर्ष 26 : अंक 34 : नई दिल्ली : 13-19 नवम्बर 2020

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण आदि चारित्रात्माएं हैदराबाद में स्थित 'महाश्रमण वाटिका' में सुखसातापूर्वक विराजमान हैं। चतुर्मास की परिसम्पन्नता में एक मास से भी कम समय रह गया है, किन्तु श्रद्धालुओं के आवागमन का क्रम क्रमशः बढता जा रहा है। रात्रि और प्रातःकाल अब हल्की ठंड रहने लगी है। पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में आगामी २८ नवम्बर को दीक्षा समारोह समायोज्य है, जिसमें पूज्यप्रवर द्वारा अब तक दो मुमुक्षु भाइयों व एक मुमुक्षु बहन की दीक्षा घोषित हो चुकी है। पूज्यप्रवर चतुर्मास के पश्चात् अर्थात १ दिसम्बर को महाश्रमण वाटिका से प्रस्थान कर हैदराबाद शहर में पधारेंगे और कुछ दिनों तक शहर के उपनगरों में विहरण के उपरान्त रायपुर की ओर प्रस्थान करेंगे, ऐसी संभावना है।

स्मृतियां लॉकडाउन की

हैदराबाद की ओर बढते चरण

७ जून। परमाराध्य आचार्यप्रवर आज प्रातः येली से तुरोरी की ओर प्रस्थित हुए। सूर्य उर्ध्वारोहण के साथ क्रमशः तेजस्वी बनता हुआ प्रखर आतप बरसा रहा था, किन्तु पूज्यचरणों को रोक पाना उसके लिए संभव नहीं था। आचार्यप्रवर क्रमशः तीक्ष्ण बनती धूप के बीच निरंतर गन्तव्य की ओर गतिमान थे।

मार्ग में साध्वी चन्दनबालाजी आदि पांच साध्वियों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। आचार्यप्रवर ने एक स्थान पर विराजमान होकर उन्हें दर्शन दिए। कई वर्षों बाद हुए गुरुदर्शन से उपजी प्रसन्नता साध्वियों की भावभंगिमा और भक्तिपूर्ण शब्दों में अनायास मुखरित हो रही थी। साध्वियों ने गीत की प्रस्तुति के द्वारा भी अपनी हर्षाभिव्यक्ति की।

आचार्यप्रवर ने साध्वी चन्दनबालाजी की प्रार्थना पर उनका वि.स. २०७७ का चतुर्मास हैदराबाद घोषित किया। आचार्यप्रवर के इस अनुग्रह से साध्वियां हर्षविभोर हो उठीं। पूज्यप्रवर ने उन्हें ग्रुप सी अर्थात् साध्वीप्रमुखाजी के साथ हैदराबांद की ओर बढने का निर्देश प्रदान किया।

इस प्रकार पूज्यप्रवर वहां करीब आधा घण्टा विराजमान रहे तो धूप और भी तीव्र हो गई। पूज्यप्रवर चिलचिलाती धूप में करीब १७ कि.मी. का विहार सम्पन्न कर तुरोरी में स्थित श्री ज्ञानेश्वर विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के प्रिंसिपल श्री एस.वाई. जादव आदि ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

कर्नाटक में पावन प्रवेश

८ जून। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने आज प्रातः महाराष्ट्र के तुरोरी से कर्नाटक के चंडीकापुर की ओर प्रस्थान किया। यों तो राजमार्ग पर वाहनों का आवागमन प्रतिदिन क्रमशः बढता जा रहा है, किन्तु आज ज्यों-ज्यों कर्नाटक की सीमा निकट होती गई, यातायात भी कम होता गया। स्पष्ट था कि महाराष्ट्र में कोरोना के अत्यधिक प्रभाव के कारण अब भी महाराष्ट्र से अन्य राज्यों में जाना आसान नहीं है। राज्य की सीमा पर कर्नाटक प्रशासन द्वारा की गई नाकेबन्दी भी इसकी साक्ष्य थी। इन सबके बावजूद पूज्यप्रवर की यात्रा के लिए कर्नाटक सरकार द्वारा न केवल लिखित स्वीकृति दी गई है, अपितु पूज्यप्रवर की सुरक्षा और यात्रा व्यवस्थाओं के लिए संबंधित विभागों को निर्देश भी जारी किए गए हैं। स्थानीय प्रशासन द्वारा चारों ग्रुप्स की सेवा में हर दिन के लिए पृथक्-पृथक् नोडल ऑफिसर्स नियुक्त किए गए हैं। इन अधिकारियों को चारों ग्रुप्स

के प्रवास हेतु अपेक्षित स्थान की व्यवस्था, सुरक्षा आदि का जिम्मा सौंपा गया है। प्रतिकूलता की संभावना के बीच प्रशासन और ग्रामीणों की ओर से अनुकूलता ही अनुकूलता प्राप्त हो रही है।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ग्यारह कि.मी. के विहार के बाद महाराष्ट्र राज्य से कर्नाटक राज्य में प्रविष्ट हुए। उपस्थित पुलिस अधिकारियों ने आचार्यप्रवर का सादर स्वागत करते हुए अपना दायित्व संभाल लिया। कर्नाटक का बिदर जिला पूज्यचरणों से पावन बना।

आचार्यप्रवर के कर्नाटक प्रवेश के अवसर पर कर्नाटकवासी सैंकड़ों श्रद्धालु स्वागत में उपस्थित होना चाहते थे, किन्तु वर्तमान परिस्थिति को देखते हुए उन्हें स्वीकृति नहीं दी गई। श्रद्धालुओं ने निर्धारित व्यवस्था का पालन भी किया।

आज तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाधिशास्ता परम पूज्य आचार्य तुलसी का महाप्रयाण दिवस है। इस संदर्भ में आचार्यप्रवर ने पौरुषी की। आज सूर्य प्रखरता के साथ आतप बरसा रहा था, किन्तु पीछे से बहती हुई हवा और आसमान में गति कर रही बादलों की टुकड़ियां तापमान पर कुछ नियंत्रण बनाए हुए थीं।

आचार्यप्रवर करीब १६ कि.मी. का विहार कर चंडीकापुर स्थित राजकीय उच्च एवं माध्यमिक स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। बसव कल्याण तहसील के रेवेन्यु डिपार्टमेन्ट के हेड श्री शरनुजी तथा विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री शिवाजी राव पाटिल ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने आज के अपने मंगल प्रवचन में परम पूज्य आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डालते हुए उनके चरणों में अपनी विनयांजलि अर्पित की।

साहसिक यात्रा कर रहे हैं आप

६ जून। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर आज प्रातः चंडीकापुर से कौइयल की ओर प्रस्थित हुए। प्रलम्ब विहार और प्रखर धूप के संयोग के बीच भी पूज्यचरण निरंतर गंतव्य की ओर बढते गए।

मार्ग में स्थानीय एस.डी.एम. श्री भंवरसिंह मीणा (आई.ए.एस.) ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। पूज्यप्रवर की यात्रा में श्री मीणा का अच्छा सहयोग प्राप्त हो रहा है। वे मूलतः सवाई माधोपुर से हैं, यह ज्ञात हुआ तो पूज्यप्रवर ने उनसे कुछ क्षण राजस्थानी भाषा में वार्तालाप भी किया।

पूज्यप्रवर 'बसवकल्याण' नगर के निकट से आगे पधारे। शहर के प्रवेश पर बना हुआ विशाल द्वार इस शहर के वैशिष्ट्य को दर्शा रहा था। बताया गया कि यह कर्नाटक के प्रसिद्ध संत बसवेश्वर की कर्म भूमि है। शहर के भीतरी भाग में संत बसवेश्वर की विशाल मूर्ति भी दिखाई दे रही थी।

आचार्यप्रवर करीब १६ कि.मी. का विहार कर कौइयल में राजमार्ग के निकट नवनिर्मित गुरदीप ढाबा में पधारे। आज का प्रवास यहीं हो रहा है। श्री मोहनसिंहजी ने अपने स्थान में आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। ढाबा के उद्घाटन से पूर्व ही महापुरुष के चरणस्पर्श से अपने स्थान को पवित्र बना हुआ देखकर वे अत्यंत हर्षविभोर थे।

सायंकाल स्थानीय विधायक श्री बी.नारायण और बसवकल्याण के पूर्व मेयर श्री अजहरभाई पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ आए। श्री बी. नारायण बोले-'गुरुजी! आपके चरणों से हमारा क्षेत्र पवित्र हो गया। आपके साक्षात् दर्शन कर हम धन्य हो गए। देश आप जैसे महापुरुषों के कारण ही बचा हुआ है। आप इस भयंकर महामारी के समय भी अपने वचन को निभाने के लिए यात्रा कर रहे हैं, यह बहुत बड़ा साहसिक कार्य है। भगवान स्वयं आपकी रक्षा कर रहा है।' आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान किया। उन्हें पूज्यप्रवर की अहिंसा यात्रा के विषय में जानकारी भी दी गई। आज ग्रुप बी के सदस्य भी कर्नाटक की सीमा में प्रविष्ट हो गए।

मौसम ने ली करवट

१० जून। परम पूज्यप्रवर आचार्यप्रवर आज प्रातः कौइयल से करीब ७ कि.मी. का विहार कर राजेश्वर में स्थित लिलियन पब्लिक स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हो रहा है।

विद्यालय के वाइस प्रेसिडेन्ट हाजी नजीब खान ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। कई अन्य ग्रामीण भी पूज्यप्रवर के स्वागत में सश्रद्धा उपस्थित थे। पूज्यप्रवर ने उन्हें भी पावन आशीर्वाद प्रदान किया। ये भक्तिमान ग्रामीण गत कल से ही अहिंसा यात्रा के सेवार्थियों के सहयोग में जुटे रहे। उन्होंने दूध आदि आवश्यक सामग्री बड़ी आत्मीयता के साथ कार्यकर्ताओं को उपलब्ध करवाई। किसी भी चीज के रुपये वे स्वीकार करना नहीं चाह रहे थे, किन्तु कार्यकर्ताओं के आग्रह के कारण उन्हें शुल्क स्वीकार करना पड़ा।

आज मध्याह्न में मौसम ने करवट ली। कुछ तेज वर्षा के साथ मौसम सुहावना बन गया। आज महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी के नेतृत्व में ग्रुप सी भी कर्नाटक राज्य की सीमा में प्रविष्ट हो गया।

परम पूज्य का प्रवास पाकर पुलकित हुआ पाटिल परिवार

११ जून। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आज प्रातः राजेश्वर से हुमनाबाद के लिए प्रस्थान किया। गत कल से ही आसमान में बादल छाए हुए थे, इस कारण मौसम कुछ शीतलता धारण किए हुए था। मौसम का यह सुहावना मिजाज प्रायः पूरे विहार के दौरान बना रहा। मार्ग में यदा-कदा रिमझिम वर्षा भी हुई। बादलों के कारण सूर्य अदृश्य ही बना रहा। पूज्यप्रवर करीब १३ कि.मी. का विहार कर हुमनाबाद में स्थित शकुंतला कॉलेज के विशाल व सुरम्य परिसर में पधारे। पूज्यप्रवर का प्रवास इस परिसर के छात्रावास में हुआ।

पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल के निर्धारण में इस बात पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है कि उसके आसपास आबादी ज्यादा न हो। आज का स्थान विहार मार्ग के दायीं ओर स्थित और प्रवास स्थल तो इस परिसर में भी कुछ भीतर था। ऐसे में बाहर से यह जान पाना कठिन था कि यही प्रवास स्थल है। इस कारण कुछ संत आज प्रवास स्थल से करीब २.५ कि.मी. आगे निकल गए। बाद में कार्यकर्ताओं ने जाकर उन्हें प्रवास स्थल की अवगति दी। वे उस मार्ग से लौटे और प्रवास स्थल में पहुंचे। पूज्यप्रवर ने इसे देखते हुए आज अन्य ग्रुप्स के साधु-साध्वियों को प्रवास स्थल की सही अवगति करवाई, ताकि उन्हें कोई कठिनाई न हो। इस प्रकार पूज्यप्रवर की मंगल छत्रछाया में सभी चारित्रात्माएं सानंद निश्चिंततापूर्वक यात्रायित हैं। ऐसे महान गुरु जब शिष्यों की चिंता करने वाले हों तो निश्चिंतता स्वतः हो जाती है।

स्थानीय विधायक और इस कॉलेज के ऑनर श्री राजशेखर पाटिल आज सपरिवार पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ आए। उन्हें आचार्यप्रवर की अहिंसा यात्रा के विषय में जानकारी दी गई। वे बोले-'गुरुजी! आपका आशीर्वाद मिल गया, यह हमारे लिए बहुत बड़ी बात है। आपके चरणस्पर्श से हमारा यह स्थान पवित्र हो गया।' वे पूज्यप्रवर को अर्पित करने के लिए अपने साथ फल, मेवा आदि लेकर आए थे। उन्हें साधुचर्या की अवगति देकर समझाया गया। श्री पाटिल और उनके परिजन पूज्यप्रवर के दर्शन कर भावविभोर थे।

श्री पाटिल के जाने के बाद कुछ ही समय में स्थानीय तहसीलदार श्री नागय्याजी भी पूज्यप्रवर के दर्शन हेतु उपस्थित हुए और पूज्यप्रवर से मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

सायंकाल विधान परिषद सदस्य डॉ. चन्द्रशेखर पाटिल ने सपरिवार पूज्यप्रवर के दर्शन किए। आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। उन्हें अहिंसा यात्रा के बारे में अवगति दी गई। पूरा परिवार पूज्यप्रवर से आशीर्वाद पाकर धन्यता की अनुभूति कर रहा था।

आज डी ग्रुप के सभी सदस्य भी कर्नाटक की सीमा में प्रविष्ट हो गए। इस प्रकार गुरुकुलवासी चारित्रात्माओं की इस बार की महाराष्ट्र प्रांत की यात्रा सानंद सम्पन्न हो गई।

वर्षा ने करवाया ग्रुप बी व ग्रुप सी का मिलन

१२ जून। गत रात्रि से चल रहा रिमझिम बारिश का दौर आज सूर्योदय के बाद भी जारी था। इस कारण पूज्यप्रवर को विहार के लिए कुछ प्रतीक्षा करनी पड़ी। पूज्यप्रवर के विहार से पूर्व ही शकुन्तला कॉलेज के ऑनर पाटिल परिवार के कई सदस्य पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ उपस्थित हो गए। ज्ञातव्य है कि स्थानीय विधायक श्री राजशेखर पाटिल तथा स्थानीय विधान परिषद् सदस्य डॉ. चन्द्रशेखर पाटिल दोनों सगे भाई हैं और इन दो

भाइयों सहित चार भाइयों के परिवार संयुक्त परिवार के रूप में रहते हैं। पूज्यप्रवर का गत कल का प्रवास पाटिल परिवार के कॉलेज में हुआ तो परिवार के प्रायः सभी सदस्यों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। सभी परिजन आचार्यप्रवर के त्याग-तपोमय व्यक्तित्व से अत्यन्त प्रभावित थे।

करीब ७.३५ बजे वर्षा थमने की सूचना मिली तो पूज्यप्रवर ने हुमनाबाद से तल्मादगी की ओर प्रस्थान किया। पाटिल परिवार के सदस्य अपने परिसर के मुख्य द्वार तक पूज्यप्रवर को पहुंचाने आए। आज प्रायः पूरे विहार के दौरान आकाश मेघाच्छन्न रहा। इस कारण सूर्य प्रायः अदृश्य या तेजहीन रहा। विहार के दौरान भी यदा-कदा हल्की बूंदाबांदी होती रही।

पूज्यप्रवर करीब १२.३ कि.मी. का विहार कर तल्मादगी में स्थित सेन्ट मैरी इंग्लिश मीडियम स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय से संबंधित फादर श्री जे. डेनियल, विद्यालय के प्रिंसिपल सिस्टर रोजलीन आदि ने आचार्यप्रवर का सादर स्वागत किया। फादर श्री डेनियल के निवेदन पर पूज्यप्रवर ने मध्याह्न में सेंट मैरी विद्यालय परिवार के लिए अपना मंगल संदेश प्रदान किया, जो कि विद्यालय की विजिटर बुक में अंकित किया गया। आसमान में अब भी बादल छाए हुए हैं। इस कारण धूप नदारद है।

आज वर्षा के कारण ग्रुप बी की साध्वियों का भी विहार कुछ विलम्ब से हुआ और ग्रुप सी की साध्वियां वर्षा के अभाव में यथासमय अपने गतरात्रिक के प्रवास स्थल से प्रस्थान कर अपने आज के गंतव्य स्थल पर पहुंच गईं। चूंकि आज ग्रुप सी का विहार मात्र करीब सात ही कि.मी. का था और ग्रुप बी की साध्वियां तब तक प्रस्थित नहीं हुई थीं, इसलिए सभी साध्वियों का आज अनायास मिलन हो गया। यों तो दोनों ग्रुप की साध्वियां सोश्यल डिस्टेंसिंग का अनुपालन करते हुए परस्पर मिलकर प्रसन्न थीं, किन्तु ग्रुप बी की मुख्यनियोजिकाजी आदि साध्वियां साध्वीप्रमुखाजी के दर्शन पाकर विशेष हर्षित थीं। मिलन के कुछ ही समय बाद वर्षा थम गई तो ग्रुप बी की साध्वियों ने अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान कर दिया।

१३ जून। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर आज प्रातः तल्मादगी से मन्नेखेल्ली की ओर प्रस्थित हुए। गत रात्रि में हुई वर्षा का प्रभाव भूमि पर स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा था। चुनौतियों, आपदाओं, कठिनाइयों और विघ्नों की स्थितियों में भी जो चरण नहीं रुके, उन चरणों की गति आज वर्षा के कारण उत्पन्न लट, शंख आदि जीवों ने मंद कर दी। आचार्यप्रवर उन निरीह प्राणियों की हिंसा से बचने के लिए बहुत ही मंद गति से आगे बढते हुए सबको सचेत भी कर रहे थे। प्रायः पूरे विहार के दौरान आकाश में बादलों की उपस्थिति सूर्य को निस्तेज बनाए हुए रही।

पूज्यप्रवर करीब १० कि.मी. का विहार परिसम्पन्न कर मन्नेखेल्ली में स्थित सी.ई.एस. कॉलेज में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के प्रिंसिपल श्री रमेशजी बुल्ला आदि शिक्षकों ने पूज्यप्रवर को वन्दन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। पूज्यप्रवर ने उन्हें पावन प्रेरणा भी प्रदान की।

१४ जून। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आज प्रातः कर्नाटक के मन्नेखेल्ली गांव से तेलंगाना के चिरागपल्ली गांव की ओर प्रस्थित हुए। सूर्य और बादलों की आंखमिचौनी के बीच मौसम भी करवट बदलता जा रहा था, किन्तु मौसम के विविध रूपों के बीच भी दृढ आत्मबली और वचननिष्ठ आचार्यप्रवर निरंतर अपने गंतव्य की ओर अग्रसर थे।

तेलंगाना की सीमा से कुछ पूर्व तेलंगाना के सांगारेड्डी जिला के एडिश्नल कलेक्टर राजर्षि शाह ने पूज्यचरणों में अपनी भावांजलि अर्पित की। वे मूलतः जयपुर के निवासी हैं। उन्होंने पूज्यप्रवर से संक्षिप्त वार्तालाप के दौरान अपनी स्मृति के अनुसार आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के जयपुर प्रवास का जिक्र किया।

परम पावन आचार्यप्रवर ने कर्नाटक की सीमा को पार कर तेलंगाना की सीमा में प्रवेश किया तो तेलंगानावासियों का चिरप्रतीक्षित स्वप्न साकार हो उठा। इस अवसर पर हजारों तेलंगानावासी श्रद्धालु आचार्यप्रवर का स्वागत करने हेतु उपस्थित होना चाहते थे, किन्तु वर्तमान परिस्थिति के संदर्भ में उन्होंने

संघीय निर्देशों का पालन करते हुए अपने-अपने स्थान से ही पूज्यप्रवर को भाववंदन किया। तेलंगानावासी श्रद्धालुओं की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हुए हैदराबाद चतुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री महेन्द्र भंडारी आदि ने आचार्यप्रवर का सश्रद्धा भावपूर्ण स्वागत किया।

तेलंगाना आचार्यप्रवर के आचार्य पदाभिषेक के बाद इक्कीसवें और अहिंसा यात्रा के दौरान उन्नीसवें राज्य के रूप में पूज्यचरणों से पावन बना। करीब पांच वर्ष पूर्व विदेशी धरती पर स्वयं द्वारा की गई हैदराबाद चतुर्मास की घोषणा को साकार करने के लिए अनगिनत चैतावनियों, चुनौतियों और कठिनाइयों को पार कर आचार्यप्रवर ने तेलंगाना में प्रवेश किया तो एक नए इतिहास का सृजन हो गया। आचार्यप्रवर के निर्विघ्न और सकुशल तेलंगाना में पधारने से सम्पूर्ण धर्मसंघ में हर्ष एवं निश्चिन्तता का वातावरण और अधिक पुष्ट हो गया।

पूज्यप्रवर करीब १६ कि.मी. का विहार सम्पन्न कर तेलंगाना के सांगारेड्डी जिले में स्थित चिरागपल्ली गांव में पधारे। गवर्नमेन्ट प्राइमरी स्कूल में आज का प्रवास हुआ।

जहीराबाद में पावन पदार्पण

१५ जून। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने आज प्रातः चिरागपल्ली से जहीराबाद की ओर प्रस्थान किया। विहार के दौरान सूर्य यदा-कदा तीव्र आतप बरसाने का प्रयास कर रहा था, किन्तु सघन मेघ समूह और हवा का वेग उस पर हावी रहे। इस कारण वातावरण अनुकूल बना रहा। राजमार्ग पर लट, शंख, चींटी, मकौड़ा आदि जीवों की उपस्थिति ने आचार्यश्री की गति को मंद बना दिया। पूज्यप्रवर करीब १६ कि.मी. का विहार कर जहीराबाद में स्थित विद्या भारती हाइ स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

जहीराबाद के एकमात्र तेरापंथी परिवार के सदस्यों ने प्रवास स्थल के बाहर पूज्यप्रवर का सादर स्वागत करते हुए पावन प्रेरणा और मंगल आशीष प्राप्त की। अपने आराध्य का आगमन इस रुणवाल परिवार को धन्यता की अनुभूति करा रहा था। सामान्य स्थितियों में तो पूज्यप्रवर का जहीराबाद पदार्पण संभवतः नहीं होता, किन्तु परिस्थितियां बदलीं तो अहिंसा यात्रा का पथ भी बदल गया। इसका अनायास लाभ जहीराबादवासियों को मिल गया। आज श्री वीरेन्द्र रेड्डी ने भी पूज्यप्रवर के दर्शन किए। पूज्यप्रवर की इस यात्रा में श्री रेड्डी कार्यकर्ताओं का बहुत सहयोग कर रहे हैं। आज ग्रुप बी के सदस्य तेलंगाना में प्रविष्ट हो गए।

●●●

क्रमशः ...

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण हैदराबाद में

पाक्षिक संबोध : प्रसन्नता की त्रिपदी अपनाएं

१ नवम्बर। आज सूर्योदय के पश्चात् साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों ने पूज्य सन्निधि में उपस्थित होकर पूज्यप्रवर से पाक्षिक खमतखामणा किए। पूज्यप्रवर ने पाक्षिक संबोध प्रदान करने के क्रम में आज

देहप्रसादो रसनाजयेन, मनप्रसादः समताश्रयेण।
दृष्टिप्रसादो ग्रहमोचनेन, पुण्यत्रयीयं मम देव! भूयात्।।

श्लोक के आधार पर शिक्षण प्रदान करते हुए कहा--'मांग की गई कि तीन चीजें मेरी हो जाएं-देहप्रसाद, मनःप्रसाद और दृष्टिप्रसाद। प्रसाद अर्थात निर्मलता। देहप्रसाद तीन रूप में हो सकता है। बाह्य स्वच्छता, उदर स्वच्छता और शारीरिक स्वस्थता। साधना के लिए उदर स्वच्छता और शारीरिक स्वस्थता का ध्यान रखना चाहिए। उसके लिए रसनाजय अपेक्षित होता है। खाने में लोलुपता संयम में दोष लगाने वाली, आत्मा का नुकसान करने वाली और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकती है। जिस वस्तु में आसक्ति हो, उसका त्याग कर लिया जाए तो रसनाजय की दिशा की में आगे बढा जा सकता है।

दूसरा प्रसाद है-मनःप्रसाद। चित्त की प्रसन्नता। समता में रहने से मन की प्रसन्नता प्राप्त हो सकती है। प्रतिकूल परिस्थिति में भी समता-शांति में रहने का प्रयास करना चाहिए। समता के आश्रय से मन प्रसन्न रह सकता है।

तीसरा प्रसाद है-दृष्टि प्रसाद। दृष्टिकोण सम्यक् रहे। इसके लिए आग्रह को छोड़ना चाहिए। पूज्यप्रवर ने (प्रभो तुम्हारे पावन पथ पर गीत के अन्तर्गत 'आग्रहहीन गहन चिन्तन का ....' पद्य का संगान किया।) कहीं आग्रह काम का भी हो सकता है और कहीं आग्रह को छोड़ना उपयोगी हो सकता है। यथार्थ के शोध में अनाग्रह और यथार्थ प्राप्त होने पर सत्याग्रह रहना चाहिए। व्यवहार में भी दुराग्रह नहीं रहना चाहिए।' पूज्यप्रवर से इस प्रकार शिक्षण प्राप्त कर साध्वियां प्रमुदित थीं।

आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परामाराध्य आचार्यप्रवर का 'प्रसन्नता की त्रिपदी' विषयाधारित मंगल प्रवचन हुआ। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने भी अपना उद्बोधन प्रदान किया।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक श्री भागवत का समागमन

आज करीब ग्यारह बजे से पूर्व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहनराव भागवत पूज्य सन्निधि में उपस्थिति हुए। प्रतिवर्ष पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ आने का क्रम उन्होंने इस वर्ष भी अक्षुण्ण रखा। उन्होंने आते ही पूज्यप्रवर को सविनय वन्दन किया। तदुपरान्त दोनों विभूतियों के बीच वार्तालाप का क्रम रहा, जिसके कुछ अंश इस प्रकार हैं-

श्री भागवतजी ने अपने साथ आए तेलंगाना प्रांत प्रचारक श्री देवेन्द्रजी, सहप्रान्त प्रचारक श्री श्रीधरजी और अपने सहायक श्री परीक्षितजी का परिचय करवाया। उन्होंने पूज्यप्रवर को नारियल अर्पित करने की भावना व्यक्त की। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि पूज्यप्रवर इसे नहीं ले सकते तो उन्होंने अपनी भावना का संवरण किया।

श्री भागवत - स्वास्थ्य कैसा है?

आचार्यप्रवर - प्रायः ठीक है।

श्री भागवत - कोरोना काल में कोई कष्ट तो नहीं हुआ?

आचार्यप्रवर - हम लोग महाराष्ट्र की यात्रा में थे। सोलापुर से पहले ही हम ठहर गए। करीब ७२ रात वहां रुके रहे। फिर १ जून को वहां से चले और २३ जून को हैदराबाद पहुंचे।

श्री भागवत - चतुर्मास समाप्ति तक यहीं रहेंगे?

आचार्यप्रवर - ३० नवम्बर तक चतुर्मास है। १ दिसम्बर को संभवतः यहां से प्रस्थान करना है।

श्री भागवत - मार्च में नागपुर आएंगे?

आचार्यप्रवर - हमारा प्रयास है। हालांकि कोरोना की स्थिति तो है, फिर भी हम यात्रा का ही चिन्तन कर रहे हैं।

श्री भागवत - महाराजजी! कोरोना भी चलेगा और जीवन भी चलेगा। कुछ ध्यान रख लेने से इसकी बाधा नहीं है। जैसे-परस्पर अन्तर (सोश्यल डिस्टेंसिंग) रखना और मुखाच्छादन (मास्क) पहनना। ये दोनों चीजें जरूरी हैं।

श्री भागवत - हमारी कार्यकारी मंडल की बैठक रहती है। इस परिस्थिति के कारण सब एक जगह इकट्ठा होने की बजाय हम अधिकारी लोग ही ग्यारह जगह जा रहे हैं। एक जगह होने वाली वह बैठक ग्यारह जगह सम्पन्न हो रही है। कर्नाटक, आंध्रा और तेलंगाना की द्विदिवसीय बैठक यहां थी, वह कल समाप्त हुई। आज अहमदाबाद जाना है।

श्री भागवत - आपसे प्रतिवर्ष एक बार मिलने का मेरा नियम है।

आचार्यप्रवर - बेंगलुरु के बाद अब आना हुआ है।

मुनि कुमारश्रमणजी- इस बार अप्रेल माह में औरंगाबाद में मिलना तय हो चुका था, किन्तु परिस्थिति के कारण ऐसा नहीं हो सका।

श्री भागवत - हां, उस समय मुझे आना था, पर संभव नहीं हुआ।

आचार्यप्रवर - इस बार दूर से मिलना हो गया।

मुनि कुमारश्रमणजी- दो-तीन बार हो गया। जब आचार्यप्रवर बीएमआइटी में थे, तब आपका फोन आया था। उसके बाद आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी समारोह में आपका वक्तव्य हुआ। उसे आचार्यप्रवर ने भी देखा। उसके बाद महासभा के प्रतिनिधि सम्मेलन में आपका वक्तव्य था, उसे भी आचार्यप्रवर ने सुना। वह भी बहुत सुन्दर वक्तव्य था।

श्री भागवत - महाराजजी! आप लोगों को तो पता ही है कि संगठन की सुदृढता के लिए क्या करना। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और तेरापंथ में संगठन का समान रूप है। संगठन केवल समूह नहीं है, आत्मीयता का एक बंधन है।

आचार्यप्रवर - इस वर्ष कई काम हो गए। रामजन्म भूमि वाला कार्य भी हो गया।

श्री भागवत ने मंदिर के संदर्भ में भावी योजना के विषय में बताया और उन्होंने विजयादशमी के अवसर पर दिए गए स्वयं के भाषण की प्रति पूज्यप्रवर को निवेदित की। उसके साथ उन्होंने कोरोना काल में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ द्वारा तेलंगाना में किए गए जनसेवा के कार्यों की रिपोर्ट भी पूज्यप्रवर को अर्पित की।

आचार्यप्रवर - हमारा अगला चतुर्मास राजस्थान के भीलवाड़ा में है। अभी प्रयास यह है कि हमें यहां से रायपुर छत्तीसगढ़ में जाना है। वहां मर्यादा महोत्सव का कार्यक्रम रखा हुआ है। फिर नागपुर होते हुए मध्य प्रदेश जाना है और वहां से राजस्थान जाना है। इस प्रकार करीब दो हजार किलोमीटर के आसपास का यात्रा क्रम है।

श्री भागवत के पूछने पर पूज्यप्रवर ने उन्हें अपनी आगामी यात्रा के विषय में अवगति प्रदान की।

आचार्यप्रवर - कोरोना के कारण चिन्तन करते रहते हैं कि कैसे-कैसे आगे बढें।

श्री भागवत - लेकिन महाराजजी! कोरोना तो अभी रहेगा, बाकी बातें खुल जाएंगी। इसलिए प्रवास (यात्रा) के संदर्भ में ज्यादा सोचना नहीं पड़ेगा। हम भी सोच रहे हैं कि हमें वर्ग आदि कैसे करना है। कम संख्या में, दो-तीन प्रांत मिलाकर और कुछ प्रतिबंध लगाकर ऐसा कुछ करेंगे। प्रशिक्षण, साधना, आर्थिक व्यापार आदि बातें रुक नहीं सकतीं। ऑनलाइन से जानकारी मिल सकती है, किन्तु सान्निध्य से मन पर जो प्रभाव होता है वह ऑनलाइन से उतना नहीं हो सकता। वह तो सान्निध्य से, व्यवहार से ही हो सकता है। उसके लिए प्रत्यक्ष उदाहरण चाहिए।

आचार्यप्रवर - ऑनलाइन के करने से साक्षात सम्पर्क को बंद नहीं कर सकते।

पूज्यप्रवर ने वहां उपस्थित मुख्यनियोजिकाजी, साध्वीवर्याजी, मुख्यमुनिश्री आदि साधु-साध्वियों का परिचय प्रदान किया।

आचार्यप्रवर - कोरोना बोलकर काम बन्द नहीं करना चाहिए।

श्री भागवत - कोरोना तो एक परीक्षा है कि हम काम कैसे करते हैं।

आचार्यप्रवर - जैसे हमने करीब दो हजार किलोमीटर की यात्रा की योजना बनाई है।

श्री भागवत - जी, यात्रा करनी चाहिए। बस कुछ सावधानी तो अवश्य रखनी चाहिए। कार्यक्रमों

की संख्या और कार्यक्रमों में उपस्थिति को कम किया जा सकता है। जैसे विजयादशमी पर नागपुर में लगभग ५००० लोगों की उपस्थिति रहती है। इस बार केवल ५० लोगों को ही बुलाया गया, बाकी सब लोग ऑनलाइन जुड़े रहे।

आचार्यप्रवर - हमने भी कार्यक्रम शुरु कर दिए हैं। कुछ लोग सामने बैठ जाते हैं, बाकी ऑनलाइन होता है। पहले केवल ऑनलाइन होता था।

मुख्यनियोजिकाजी - आचार्यप्रवर ने तो इस अवधि में नेशनल डिसिप्लीन का सबसे अधिक पालन किया। सरकार का सुझाव था कि बाहर मत निकलो तो आचार्यप्रवर ७२ दिन तक बीएमआइटी के उस मकान से बाहर नहीं पधारे। अब भी आचार्यप्रवर साधु-साध्वियों को कार्यक्रम से संबंधित कोई निर्देश देते हैं तो एक लाइन अवश्य लिखते हैं कि प्रशासनिक व्यवस्था का अतिक्रमण न हो तो यथानुकूलता कार्यक्रम किया जा सकता है।

श्री भागवत - हम भी सबको यही सूचना देते हैं कि कार्य शुरू करो, किन्तु नियम आदि का पालन जरूरी है। महाराजजी! मैं भी तीस दिन तक बाहर नहीं निकला। मैं बेंगलुरु में था। १६ मार्च को मैं नागपुर में पहुंच गया और २४ मार्च को लॉकडाउन शुरु हो गया। हमने ३१ जुलाई तक सारे कार्यक्रम बंद रखे और अगस्त में केवल गुरुपूजा के कार्यक्रम रखे गए। उनमें भी मात्र पांच-सात लोगों की उपस्थिति रखी गई। अब तो स्थिति यह है कि सारे नियम पालन करते हुए कार्य हो सके तो करना है। हम सबके द्वारा नियमों का पालन होने से समाज को एक संदेश जाता है और मिलकर कार्यक्रम करने से समाज की हिम्मत बढती है, क्योंकि बन्द होने का लोगों पर एक मानसिक परिणाम था, डर पैदा हो गया था। नियम-कानून में जितना बैठता है, उतना कार्य करना समाज की दृष्टि से व मन स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभप्रद है। वैसे कोरोना से लोग कुछ डर गए, यह अच्छा रहा, क्योंकि मेरा एक अनुभव है कि दुनिया के बाकी देशों की अपेक्षा भारत के लोग ज्यादा निर्भय हैं। (इस संदर्भ में श्री भागवत ने अपना एक संस्मरण भी सुनाया)

श्री भागवत - महाराजजी! आपकी यात्रा यथावत रहनी चाहिए, क्योंकि आपके विचरण से समाज को बहुत लाभ मिलता है। बस कुछ गति मंद की जाए तो समय की अल्पता को देखते हुए कुछ शॉर्टकट लिया जा सकता है। मार्ग में भी आप अपने स्वास्थ्य का ध्यान तो जरूर रखें।

आचार्यप्रवर - हमारा प्रयास है कि नागपुर में हम १६ मार्च २०२१ को पहुंचें।

श्री भागवत - उस समय हमारी प्रतिनिधि सभा होनी है और हम आशा करते हैं तब तक और भी कुछ खुल जाएगा। नहीं तो भी हमें कुछ तो नागपुर में करना ही होगा, क्योंकि यह हमारा चुनावी वर्ष है। उस समय सरकार्यवाह का तीन वर्ष के लिए चुनाव होता है। सरसंघचालक तो नियुक्त कर दिए तो वे स्वयं जब तक नहीं बदलेंगे, तब तक वे ही रहेंगे। सरकार्यवाह तीन वर्ष के लिए चुना जाता है, वह प्रक्रिया किसी भी परिस्थिति में खंडित नहीं होती। केवल जब संघ पर प्रतिबंध लगाया गया, तभी खंडित हुई। जो तृतीय वर्ष शिक्षित स्वयं सेवक हैं, मतदाता के रूप में उनका प्रतिनिधित्व रहता है। कार्यकारी मंडल के लोग भी मतदाता के रूप में रहते हैं। उन

सबकी उस समय उपस्थिति निश्चित रूप से रहती है। प्रशासनिक स्वीकृति के साथ उस सभा को तो निश्चित रूप से करना है।

मुनि कुमारश्रमणजी- भागवतजी गुरुदेव को वर्षों से नागपुर पधारने का निवेदन कर रहे हैं, अब उसके साकार होने का समय आ रहा है।

श्री भागवत (मुस्कुराते हुए) पहले वर्ष से ही मैं निवेदन करता आ रहा हूं। उस प्रतिनिधि सभा के उद्घाटन सत्र में आपका सान्निध्य रहे। यह मेरा निवेदन है।

श्री भागवत
(विदा लेने से पूर्व) - महाराजजी! अब हम चलते हैं।

आचार्यप्रवर - अब फिर नागपुर में ..... ।

श्री भागवत - उससे पहले मौका लगा तो जरूर आऊंगा, अन्यथा देर से देर नागपुर में मिलना है।

पूज्यप्रवर से मंगलपाठ सुनकर श्री भागवत ने विदा ली।

धार्मिकता के साथ मनाएं दीपावली

२ नवम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में 'धन और धर्म' विषय पर चर्चा की। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'चतुर्मास का समय है। कार्तिक मास का समय है। अब चतुर्मास का एक माह भी नहीं रहा है। चतुर्मास धर्माराधना का विशेष समय होता है। जितना संभव हो, अच्छे रूप में धर्माराधना का क्रम चलता रहे। दीपावली का प्रसंग सामने है। दीपावली लौकिक पर्व के रूप में भी मनाया जाता है। उस अवसर पर कई लोग पटाखे भी छोड़ते हैं। इस पर्व पर पटाखों का संयम करना चाहिए, हिंसा से बचने का लक्ष्य रहना चाहिए।

दीपावली भगवान महावीर का परिनिर्वाण दिवस है। भगवान महावीर जैसे महापुरुष से जुड़े उस पर्व को कितना धार्मिकता के साथ मनाया जा सके, उस अवसर पर यथानुकूलता उपवास किया जा सके, जप किया जा सके, उस पर ध्यान देना चाहिए। दीपावली के अवसर पर मिठाइयां भी खाई जाती हैं तो उस अवसर पर उपवास भी किया जा सकता है। मिठाई का स्वाद तो कुछ समय तक रह सकता है, किन्तु धर्म का संचय होता है, वह बड़ा महत्त्वपूर्ण होता है।'

परम पूज्य माणकगणी का महाप्रयाण दिवस

३ नवम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अन्तर्गत परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर का 'ठाणं' आगमाधारित पावन प्रवचन हुआ। तदुपरान्त पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'आज कार्तिक कृष्णा तृतीया है। परम पूज्य आचार्यश्री माणकगणी की वार्षिक पुण्य तिथि है और परम पूज्य गुरुदेव तुलसी की मासिक पुण्य तिथि है। परम पूज्य माणकगणी और गुरुदेव तुलसी में थोड़ी-थोड़ी समानता है। जैसे माणकगणी और गुरुदेव तुलसी दोनों का महाप्रयाण तृतीया को हुआ और दोनों का महाप्रयाण कृष्ण पक्ष में हुआ। दोनों का महाप्रयाण वि.सं. ५४ में हुआ था, करीब १०० वर्षों का फासला रहा। माणकगणी का महाप्रयाण १९५४ में हुआ और गुरुदेव तुलसी का महाप्रयाण २०५४ में हुआ। माणकगणी का राजस्थान में महाप्रयाण हुआ और गुरुदेव तुलसी का भी राजस्थान में महाप्रयाण हुआ। माणकगणी मघवागणी के उत्तराधिकारी थे और गुरुदेव तुलसी मघवागणी के कृपापात्र शिष्य रहे परम पूज्य कालूगणी के शिष्य थे। माणकगणी को चार दिन का युवाचार्यकाल मिला तो गुरुदेव तुलसी को भी युवाचार्यकाल के करीब चार दिन मिले। इस प्रकार दोनों का युवाचार्यकाल अत्यल्प रहा, यह भी दोनों में समानता है।

हमारे धर्मसंघ के छठे अनुशास्ता परम पूज्य माणकगणी हुए। वे संसारपक्ष में जयपुर के थे। श्रीमज्जयाचार्य के द्वारा उनकी दीक्षा हुई। उन्हें दो-दो आचार्यों के सान्निध्य का अवसर मिला। वि.सं. १९५४

का उनका चतुर्मास सुजानगढ में हो रहा था। उनके आचार्यकाल का वह पांचवा चतुर्मास था। वह चतुर्मास पूरा नहीं हो सका। कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा से पहले ही परम पूज्य माणकगणी का महाप्रयाण हो गया। वे युवावस्था के आचार्य बने और मानों युवावस्था में ही पधार गए थे। उम्र ज्यादा नहीं थी, उस समय वे करीब ४२-४३ वर्ष के ही थे।

धर्मसंघ को उनकी अनुशासना प्राप्त करने का अवसर ज्यादा नहीं मिला। आचार्य के रूप में उन्होंने कुछ वर्षों तक धर्मसंघ को अपनी सेवाएं दीं। वे बीमारी की चपेट में आ गए। उनके स्वास्थ्य सुधार के संदर्भ में प्रयास भी किया गया, किन्तु वह प्रयास अरण्यरोदन के समान व्यर्थ हो गया। आखिर कार्तिक कृष्णा तृतीया को उनका महाप्रयाण हो गया। उनका महाप्रयाण रात्रि में हुआ और गुरुदेव तुलसी का दिन में हुआ, किन्तु समय काफी समान-सा था। करीब ११ बजे के आसपास दोनों महापुरुषों का महाप्रयाण हुआ। मैं परम पूज्य माणकगणी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। हमारे धर्मसंघ को ऐसे व्यक्तित्व का साया मिला था। वे हमारे धर्मसंघ के अधिशास्ता बने थे, नाथ बने थे, उनके जीवन से हम प्रेरणा ग्रहण करने का प्रयास करें।

सुदीर्घजीवी साध्वी बिदामांजी का १०३वें वर्ष में प्रवेश

४ नवम्बर। आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर का 'ठाणं' आगमाधारित मंगल प्रवचन हुआ। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'साध्वी बिदामांजी संसारपक्ष में 'पीपली' गांव से है और अभी वे कालू में साध्वी उज्ज्वलरेखाजी के सिंघाड़े में हैं। बताया गया कि वे १०२वें वर्ष को पूर्ण कर १०३वें वर्ष में प्रवेश कर रही हैं। हमारे धर्मसंघ की वे पहली चारित्रात्मा है, जिन्होंने सौ वर्ष पार किए हैं। यह सुदीर्घजीविता है। पांचवें आरे में सौ-सवा सौ वर्ष का आयुष्य मानें तो वे मानों उत्कृष्ट आयुष्य की ओर बढ रही हैं। आयुष्य की दृष्टि से तो हमारे धर्मसंघ में यह अद्वितीय बात हुई है कि सौ वर्ष पार करने वाली चारित्रात्मा हुई है।'

दूसरी बात यह है वर्तमान में साध्वी बिदामांजी हमारे धर्मसंघ के सभी साधु-साध्वियों में संयम पर्याय में भी सबसे बड़ी हैं। उनकी दीक्षा वि.सं.१९९८ में हुई थी। इस प्रकार उनकी दीक्षा के ७९ वर्ष हो गए। इतना संयम पर्याय अन्य किसी चारित्रात्मा का वर्तमान में नहीं है अर्थात सबसे ज्यादा दीक्षा पर्याय अभी उनका है।

साध्वी बिदामांजी शतायु के पार के जीवन में है। अच्छी चित्त समाधि रहे। ज्यादा समय जप, स्वाध्याय में बीते, समता बनी रहे, चित्त समाधि और आत्मस्थता बनी रहे, अध्यात्म की दृष्टि से उनकी खूब गति-प्रगति होती रहे। वर्तमान में सबसे अधिक संयम पर्याय वाली साध्वी बिदामांजी के जीवन के १०३वें वर्ष के प्रवेश के अवसर पर उनके प्रति हमारी आध्यात्मिक मंगलकामना।'

हैदराबादवासियों द्वारा पूज्यप्रवर की सश्रद्धा अभिवन्दना

कार्यक्रम में चातुर्मास व्यवस्था समिति, हैदराबाद के तत्त्वावधान में हैदराबाद के श्रद्धालुओं की ओर से पूज्यप्रवर की अभिवन्दना का उपक्रम रहा। इस अवसर पर संसारपक्ष में हैदराबाद से संबद्ध मुनि वर्धमानकुमारजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री महेन्द्र भंडारी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अशोक बरमेचा, महामंत्री श्री मनोज दूगड़, स्थानीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री राहुल श्यामसुखा, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती प्रेम पारख, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष श्री मोहित बैद, अणुव्रत समिति के मंत्री श्री प्रकाश भंडारी और ज्ञानशाला संयोजिका श्रीमती सीमा दस्सानी ने पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अपने श्रद्धासिक्त हृदयोद्गार व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मंडल और तेरापंथ युवक परिषद द्वारा पृथक्-पृथक् गीतों को प्रस्तुति दी गई। प्रवास व्यवस्था समिति के मंत्री श्री संजय छाजेड़ ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन श्री लक्ष्मीपत बैद ने किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अभिवन्दना कार्यक्रम के संदर्भ में कहा--'यह कार्यक्रम रखा गया है। हैदराबाद चतुर्मास का कार्तिक मास चल रहा है। चतुर्मास भी अब सम्पन्नता के निकट जा रहा है। इस माहौल

में भी चतुर्मास का अच्छा क्रम चला है। जितना समय अवशेष है, उसका भी अच्छा उपयोग हो, अच्छा कार्य चले।'

उपलब्धि है जैन विश्व भारती मान्य विश्वविद्यालय

५ नवम्बर। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अन्तर्गत परम पूज्य आचार्यप्रवर का 'ठाणं' आगमाधारित मंगल प्रवचन हुआ। तदुपरान्त जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्व विद्यालय के वाइस चांसलर प्रो. बच्छराज दूगड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। जैन विश्व भारती संस्थान द्वारा प्रकाशित प्रो. महावीरराज गेलड़ा की कृति 'जैन आगमों का सामान्य ज्ञान (भाग-२)', प्रो.जिनेन्द्र जैन और प्रो.बी.एल.जैन द्वारा संपादित पुस्तक 'आचार्य महाप्रज्ञ का अवदान', प्रो.आनन्दप्रकाश त्रिपाठी द्वारा संपादित पुस्तक 'आचार्य महाप्रज्ञ का हिन्दी साहित्य को अवदान', १४ मोनोग्राफ तथा 'तुलसी प्रज्ञा' का आचार्य महाप्रज्ञ विशेषांक लोकार्पित किए गए।

जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय के अनुशास्ता परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'जैन विश्व भारती एक महत्त्वपूर्ण संस्था है। जैन विश्व भारती संस्थान, मान्य विश्व विद्यालय उससे जुड़ा हुआ है। वह मानों एक उपलब्धि है। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी की अनुशिष्टि और फिर आचार्य महाप्रज्ञजी का पथदर्शन और साया उसे प्राप्त हुआ। शिक्षा से जुड़ा हुआ वह एक बड़ा संस्थान है। साहित्य भी प्रकाशित हुआ है। मोनोग्राफ के रूप में जो छोटी-छोटी पुस्तिकाएं हैं, मानों थोड़े में जानकारी देने का प्रयास किया गया है। ये पुस्तिकाएं नवतत्त्व, षट्द्रव्य आदि विषयों पर प्रकाश डालने वाली सिद्ध हों।

गुरुदेव महाप्रज्ञजी की जन्म शताब्दी का वर्ष संपन्न हो चुका है। 'आचार्य महाप्रज्ञ का हिन्दी साहित्य को अवदान' पुस्तक से पाठक को अच्छी जानकारी प्राप्त हो, यह आकांक्षा है।

दूसरी पुस्तक है 'आचार्य महाप्रज्ञ का अवदान।' यह पुस्तक भी आचार्य महाप्रज्ञजी से जुड़ी है। इससे भी पाठक को अच्छी जानकारी मिले। यह मंगलकामना है।

प्रो.महावीरराजजी गेलड़ा की कृति 'जैन आगमों का सामान्य ज्ञान' (भाग-२) भी प्रकाशित हुई है। पहला भाग कई वर्षों पूर्व प्रकाशित हो चुका था। गेलड़ाजी जैन विश्व भारती इंस्टिट्यूट के प्रथम वाइस चांसलर थे। आगमों के संदर्भ में यह पुस्तक है। हमारा आगम वाङ्मय बहुत महत्त्वपूर्ण है, गरिष्ठ भी है। मानों आगमों का कुछ-कुछ सारांश लेकर पुस्तक तैयार की गई है। विद्यार्थियों व अन्य लोगों को यह अच्छी जानकारी देने वाली सिद्ध हो, यह कामना है।

'तुलसी प्रज्ञा' वर्षों से प्रकाशित हो रही है। ऐसी पत्रिकाओं के शोधपूर्ण आलेखों से कुछ गहरी जानकारी भी प्राप्त हो सके, यह कामना है।

इस प्रकार कितना साहित्य आया है। साहित्य मानों ज्ञान का संवाहक होता है। विश्वविद्यालयों का तो यह मानों आभूषण होता है। बिल्डिंग का अपना महत्त्व हो सकता है, किन्तु साहित्य विश्वविद्यालय का आभूषण है। कौनसे विश्वविद्यालय से कितना नया शोधपूर्ण साहित्य निकलता है, ज्ञानवर्धक साहित्य निकलता है, यह विश्वविद्यालय का एक अवदान भी हो सकता है और विश्वविद्यालय का एक विभूषण भी हो सकता है। जैन विश्व भारती इंस्टिट्यूट करीब तीस वर्षों से कार्य कर रहा है। यह संस्थान खूब ज्ञानात्मक व धार्मिक अवदान दे, कल्याणकारी रहे, ऐसी हमारी मंगलकामना।

जैन विश्व भारती का भावात्मक सहयोग, योगदान, संपोषण मिलता रहे, क्योंकि कहीं-कहीं सहयोग से कार्य हो सकता है। भावात्मक सहयोग अपने आप में महत्त्वपूर्ण हो सकता है। जैन विश्व भारती को भले 'कामधेनु' कहा जाए, भले 'जयकुंजर' कहे, उससे जुड़ा हुआ यह जैन विश्व भारती मान्य विश्व विद्यालय है। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी इसके प्रथम अनुशास्ता थे, परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी इसके द्वितीय अनुशास्ता थे। यह संस्थान खूब कामयाब हो, अच्छी सफलता प्राप्त करे। मंगलकामना।'

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

हैदराबाद की उपासिका श्रीमती चन्द्राजी सुराणा तथा चातुर्मास व्यवस्था समिति के मंत्री श्री विनय बैद ने कार्यक्रम के दौरान अपने श्रद्धासिक्त भावों को अभिव्यक्ति दी।

संयम रत्न की करें सुरक्षा

६ नवम्बर। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अन्तर्गत 'ठाणं' आगमाधारित मंगल प्रवचन हुआ। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'मध्यप्रदेश भारत का एक प्रांत है। हमारे कई संत वहां से जुड़े हुए हैं। हमें वहां जाना भी है। वहां उज्जैन जैसा क्षेत्र है, जहां से हमारे सप्तम आचार्य परम पूज्य श्री डालगणी हुए। आचार्यों के जन्म स्थल के संदर्भ में हमारे धर्मसंघ में राजस्थान के बाद मध्यप्रदेश का महत्त्व है।' पूज्यप्रवर ने बालमुनि ऋषिकुमारजी के माध्यम से आत्मोत्थान के संदर्भ में पावन प्रेरणा प्रदान की।

आचार्यप्रवर ने अन्य प्रसंग में कहा--'आज मुनि राहुल, मुनि कुणाल और मुनि खुश का दीक्षा दिवस है। इन्हें दीक्षित हुए एक साल हो गया। साध्वीवर्या आदि आठ वर्ष पूर्व दीक्षित साध्वियों व कुछ संतों का भी आज दीक्षा दिवस है। सभी साधु-साध्वियां आत्मकल्याण की दीक्षा में खूब आगे बढने का प्रयास करें। स्वाध्याय, ध्यान आदि खूब अच्छे रूप में चलते रहें, सेवा की अच्छी भावना रहे, कषाय उपशांत रहें। ज्यादा गुस्सा न आए, शांति रहे, सीखने की लगन रहे। अपने-अपने संसारपक्षीय ज्ञातिजनों में से किसी को तैयार करने का प्रयास भी होता रहे। इस दृष्टि से प्रेरणा देने का प्रयास करते रहें। हमने जो पाया है, वह दूसरों को मिले, इसमें सहयोगी बन सकें तो अच्छी बात हो सकती है। जो संयम रत्न प्राप्त है, वह खूब अच्छे रूप में रहे, मलिन न बने, उसकी सुरक्षा होती रहे।

साध्वीवर्या भी खूब अच्छा कार्य करती रहे। खूब सेवा करती रहे। स्वकल्याण की दिशा में बढ़े तथा औरों को भी कल्याण की दिशा में आगे बढ़ाने का प्रयास करती रहे।'

कार्यक्रम में चातुर्मास व्यवस्था समिति के परामर्शक श्री राजकुमार सुराणा, सहमंत्री श्री मुकेश सुराणा और मंत्री श्री नवीन सुराणा ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। श्री सुषमा बैद ने अपनी पुस्तक 'दर्द की धरा पर' पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित करते हुए अपनी प्रस्तुति दी।

गत १९ अक्टूबर को साहित्य संस्थान (प्रज्ञाशिखर, टाडगढ) के अध्यक्ष श्री देवराज आच्छा और पूर्व व संस्थापक अध्यक्ष श्री भीखमचंद 'भ्रमर' कोठारी ने टाडगढ स्थित 'प्रज्ञाशिखर' के संदर्भ में अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'प्रज्ञाशिखर, टाडगढ में बहुत वर्षों पूर्व मैं परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के साथ गया था। उस समय उसका थोड़ा छोटा रूप था। बाद में सन् २००८ में परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी पधारे, तब भी मैं साथ में था। वहां से गुरुदेव का जयपुर पधारना हो गया था। उसके बाद मैं मेवाड़ की यात्रा के दौरान फिर वहां गया था। यह संस्थान गुरुदेव तुलसी से भी जुड़ा हुआ है। जहां गुरुदेव के नाम से स्तूप बना हुआ है। टाडगढ में धार्मिक, ज्ञानवर्धन की खूब अच्छी गतिविधियां चलें। मंगलकामना।'

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001

मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक-संजय खटेड़ द्वारा प्रिंट मास्टर इन्टरप्राइजेज, एल.एल.पी., ६३, जी.एफ., पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला